उपभोक्ता की बचत का अर्थ

(Meaning of consumer's Surplus)

उपभोक्ता की बचत की धारणा हमारे दैनिक जीवन के अनुभवो पर आधारित है तथा इसका उपयोगिता ह्रास नियम (Law of Diminishing utility) से घनिष्ठ सम्बंध है। बाजार मे जब हम किसी वस्तु को खरीदते है तो उससे हमे उपयोगिता प्राप्त होती है। लेकिन उस वस्तु के लिए हमे मुद्रा के रूप मे मूल्य चुकाना पड़ता है जिससे हमे मूल्य के रूप मे उपयोगिता का परित्याग करना पड़ता है। दूसरे शब्दो मे जहाँ एक ओर हमे वस्तु से उपयोगिता प्राप्त होती है वही दूसरी ओर उसके लिए मूल्य चुकाते समय हमे अनुपयोगिता का अनुभव होता है। अब यदि वस्तु से प्राप्त उपयोगिता उसके लिए दिये गये मूल्य की अनुपयोगिता से अधिक हो तो उपभोक्ता को कुछ बचत प्राप्त होती है जिसे उपभोक्ता की बचत कहा जाता है। दूसरे शब्दो मे, किसी वस्तु के उपभोग से प्राप्त उपयोगिता एवं उसके लिए दिये गये मूल्य के रूप मे अनुभव की गई अनुपयोगिता के अन्तर को ही उपभोक्ता की बचत कहते है। उदाहरण के लिए मान लिया कि हमे एक शर्ट खरीदनी है उसके लिए हम 500 रूपये खर्च करने के लिए तैयार है लेकिन जब हम बाजार मे जाते है तो वह शर्ट हमे केवल 400 रूपये मे मिल जाती है। इस प्रकार हमे 100 रूपये के बराबर उपभोक्ता की बचत प्राप्त होती है। दूसरे शब्दो मे, उपभोक्ता की बचत = जो मूल्य हम देने को तैयार रहते है - जो मूल्य हम वास्तव मे देते है।

प्रो० मार्शल का विचार है कि उपभोक्ता की बचत का उदय विभिन्न अवसरो (Opportunities) वातावरणो (environment) अथवा स्थितियो (conjuctures) के कारण होता है। जिन वस्तुओ के लिए हम अधिक मूल्य दे सकते है वे वस्तुएँ आर्थिक एवं तकनीकी विकास के कारण हमे कम ही मूल्य पर मिल जाती है। यह वास्तव मे स्थिति, वातावरण अथवा अवसर का ही परिणाम है कि आज हम कम खर्च पर आराम के साथ लम्बी यात्रा कर सकते है। उसी प्रकार अखबार, नमक, दियासलाई आदि वस्तुएँ हमे कम मूल्य पर मिल जाती है। हमारे दैनिक जीवन मे ऐसे अनेक उदाहरण मिलेगे जब हम किसी वस्तु के लिए अधिक मूल्य देने को तैयार रहते है किन्तु परिस्थितिवश वह वस्तु हमे कम ही मूल्य पर मिल जाती है। इस प्रकार हमे उपभोक्ता की बचत प्राप्त होती है।

प्रो० मार्शल (Marshall) ने उपभोक्ता की बचत की परिभाषा इस प्रकार से दी है-

"किसी वस्तु से वंचित रहने के बजाय उपभोक्ता जो मूल्य देने को तैयार रहता है तथा वास्तव मे जो मूल्य वह देता है उसका अन्तर ही संतोष की आर्थिक माप है। इसे उपभोक्ता की बचत कहा जा सकता है।"
(The excess of price which he (consumer) would be willing to pay rather than go without the thing over that which he actually does pay, is the economic measure of this surplus satisfaction. It may be called consumer's surplus).

पेन्सन (Penson) के शब्दो मे " जो मूल्य हम देने को तैयार रहते है और वास्तव मे जो मूल्य हमे देना पड़ता है उसके अन्तर को उपभोक्ता की बचत कहते है।" (The difference between what we would pay and what we have to pay is called consumer's surplus.)

टॉसिग (F.W Taussig) के शब्दो मे " उपभोक्ता की बचत कुल उपयोगिता मापने वाली रकम तथा कुल विनिमय-मूल्य मापने वाली रकम के बीच का अन्तर है।" (consumer's surplus is the difference between the sum which measures total utility and which measures total exchange value).